महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

हिंदी विश्वविद्यालय के माघ मेला शिविर में भारतीय संस्कृति एवं संस्कार विषय पर हुआ व्याख्यान

वसुधैव कुटुम्बकम की आत्मा से निकलती है संस्कार, संस्कृति और अध्यात्म : ब्रम्हा कुमारी मनोरमा

वर्धा, 07 फरवरी 2024: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र, झूंसी, प्रयागराज द्वारा आयोजित माघ मेला शिविर में 'भारतीय संस्कृति और संस्कार' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता ब्रम्हा कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय माउंट आबू की धार्मिक प्रभाग कीअध्यक्ष ब्रम्हा कुमारी मनोरमा दीदी रही। ब्रम्हा कुमारी मनोरमा दीदी ने कहा कि हमारी जो संस्कृति, संस्कार और अध्यात्म है वह 'वसुधैव कुटुम्बकम' से

निकलती है। उन्होंने अध्यात्म के बारे में बताते हुए कहा कि आत्मा से निकली हुई भावना, भाईचारे का प्रभाव हो और मोहब्बत का जज्बा हो वही अध्यात्म है। उन्होंने प्राचीन संस्कृति का जिक्र करते हुए कहा कि हमें शिक्षा के साथ दीक्षा पर भी ध्यान देना चाहिए। विशिष्ट वक्ता के रूप में ब्रम्हा कुमारी ईश्वरी विश्वविद्यालय के मल्टीमीडिया को-ऑर्डिनेटर डॉ. मेधावी शुक्ला रहीं। उन्होंने कहा कि संस्कृति परिवर्तन का आधार है संस्कार परिवर्तन। डॉ. शुक्ला ने भारतीय संस्कृति का विभिन्न संदर्भों के साथ व्याख्या करते हुए कहा कि हमारी संस्कृति हमें गौरान्वित महसूस कराती है। कार्यक्रम में दूसरे विशिष्ट वक्ता माउंट आबू की श्रद्धा दीदी रही। उन्होंने कहा कि पहले हमें स्वंय को बदलना होगा तभी संसार बदलेगा। हमें

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

अपनी सोच बदलना चाहिए यदि हम अच्छा सोचेंगे तभी हमारा वातावरण शुद्ध होगा। उन्होंने यह भी कहा कि हम ईश्वर रूपी शक्ति से जितना पास रहेंगे हमारा जीवन उतना सुखद रहेगा। उन्होंने अंत मे सभी से 7 मिनट का ध्यान भी कराया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्र के अकादमिक निदेशक प्रोफेसर दिगम्बर तंगलवाड ने किया। प्रोफेसर तंगलवाड ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि मनुष्य में संस्कृति का बोध होना जरूरी है नहीं तो हम पशु की तरह व्यवहार करेंगे। उन्होंने कहा कि हमें अपने परमात्मा से जुड़ने की जरूरत है। जब हम परमात्मा से जुड़ेंगे तभी हम सांस्कारिक मनुष्य बन सकेंगे। संस्कार ही मनुष्यके चरित्र का निर्माण करते हैं। भारत के वेद, शास्त्र, पुराण हमें संस्कार देते हैं। मनुष्य को जीवन में सुख, शांति और सम्मान प्राप्त करना है तो उसे संस्कृति और संस्कार की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का शुभांरम्भ दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। मुख्य वक्ता, विशिष्ट वक्ता का स्वागत अंग वस्त्र, विश्वविद्यालय का स्मृति चिन्ह एवं फूल देकर किया गया।

कार्यक्रम का संचालन फ़िल्म अध्ययन विभाग की सहायक आचार्य डॉ. सुरभि ने किया। कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य कार्यक्रम के संयोजक एवं जनसंचार विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अख्तर आलम ने किया। जिसमें उन्होंने अतिथियों का विस्तृत परिचय कराया। कार्यक्रम का आभार सहायक आचार्य डॉ. मिथिलेश तिवारी ने किया। इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज के शिक्षक डॉ. आशा मिश्रा, डॉ. सत्यवीर, डॉ विजया सिंह, डॉ. अनूप कुमार, जयेंद्र जायसवाल, सुभाष श्रीवास्तव, राहुल त्रिपाठी, रश्मि, गीता, बिरजू प्रजापति, आदित्य, प्रभात, अजीत, विवेक सिंह, राहुल कुमार, अनुज, प्रज्ञा मिश्रा, दीक्षा द्विवेदी, अनन्या शुक्ला, सृष्टि दुबे सहित विद्यार्थी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।